

विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उचीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

वनानुभव

प्रकृति-अनुभव और वनानुभव चिकित्सा का इतिहास बहुत प्राचीन है।यह आयुर्वेद की एक श्रेष्ठ गैर-औषधीय चिकित्सा है जिस पर समकालीन शोध भी बहुत समृद्ध है। हरियाली, प्राकृतिक वातावरण, वनों और उपवनों में प्रकृति-अनुभव या दीर्घकालिक जुड़ाव का प्रसन्नता में योगदान पर पूर्व में यहाँ प्रमाण-आधारित ठोस विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था। परन्तु क्या यह हरियाली में किया गया व्यायाम और योग तुलनात्मक रूप से बेहतर स्वास्थ्य भी प्रदान करता है? वर्ष 2०22में प्रकाशित शोध को समाहितकर आज की चर्चा पुनः इसी विषय पर है।

जैसा कि पूर्व में बताया गया था, संहिताओं में स्वास्थ्य-रक्षण और रोगोपचार दोनों के लिये ऐसे अनेक सन्दर्भ हैं (देखें, च.चि.3.26०-266; च.चि.2/3, 26-3०, च.चि.4.1०6-1०9; च.वि.6.17, सु.उ.47.55-57 आदि)। उक्त सभी सन्दर्भ केवल उदाहरणार्थ और प्राचीनता दर्शित करने के उद्देश्य से उद्धृतकिये गये हैं। समकालीन शोध में पिछले कई दशकों से विभिन्न विषयों के विद्वानों ने अपनी विधा के अनुसार इस बात की ओर ध्यान खींचा है कि प्रकृति से जुड़ने और मानव स्वास्थ्य में सुधार के बीच सकारात्मक संबंध है। यह आम समझ की बात है कि प्रकृति और पर्यावरण के सान्निध्य में समय बिताना हमारे लिये स्वाभाविक रूप से अच्छा हो सकता है। प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों, प्राचीनकाल से चली आ रही सांस्कृतिक परम्पराओं और चिकित्सा पद्धतियों में इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि मानव सभ्यता का अपने स्वास्थ्य, चिकित्सा और आध्यात्मिकता के लिये प्रकृति के साथ अन्यान्योन्माश्रित जुड़ाव रहा है।

जहाँ तक हरियाली का शारीरिक और मनोरोगों को रोकने में योगदान है उस पर बहुत शोध है और उसका सम्पूर्ण विश्लेषण यहाँ देना संभव नहीं है। इस विषय में एक बेहद उपयोगी पुस्तक द एक्सपीरियंस ऑफ़ नेचर– अ साइकोलॉजिकलपर्सपेक्टिव वर्ष 1९89 में प्रकाशित हुई थी। राचेलकपलान और स्टेफेनकपलान की यह पुस्तक इस विषय में विश्व की सर्वाधिक संदर्भित पुस्तक है।जिसे लाभग 8०0० प्रकाशनों में संदर्भित किया गया है। प्राकृतिक वातावरण, लोगों और उनके बीच के संबंधों काएक प्रमाण–आधारित लेखा जोखा इस पुस्तक में है। लेखकों ने यह समझने की कोशिश की है कि लोग प्रकृति का अनुभव कैसे करते हैं और वे किस प्रकार के प्राकृतिक वातावरण पसंद करते हैं, वे जंगल के अनुभवों से क्या मनोवैज्ञानिक लाभ उठाते हैं, और हमारे आसपास के उद्यान लोगों के लिये क्यों महत्वपूर्ण हैं।

आयुर्वेद का लोक-पुरुष-साध्य सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि मानवऔर संसारएक समान हैं (च.शा.5.3: पुरुषोऽयंलोकसमिन्तः)। इस सिद्धांत के प्रकाश में देखने पर लोक या पृथ्वी के वातावरण का सीधा सीधा प्रभाव मानव के स्वास्थ्य पर पड़ता है क्योंकि लोक और पुरुष में समानता (च.शा.5.3: लोकपुरुषयोःसामान्यम्) होने से सामान्य-विषय का सिद्धांत कार्य करता है। अर्थात सामान भावों को सामान भावों से मिलाने पर उस भाव की वृद्धि और असमान भावों को मिलाने पर ह्रास होता है। सत्य बुद्धि तभी प्रकट होती है या अकल तभी आती है जब स्वयं के अंदर प्रकृति को व प्रकृति के अंदर स्वयं को देखा जाये (च.शा.5.7): सर्वलोकमात्मन्यात्मानं च सर्वलोकेसममनुपश्यतः सत्या बुद्धिः समुत्पद्यते। यहाँ पर लोक से तात्पर्य पूरी दुनिया के वातावरण से है जिसमें छः धातुयें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा आत्मा शामिल हैं (च.शा.5.7): षड्धातुसमुदायोहि सामान्यतः सर्वलोकः। इस सूची में आत्मा का शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं मानना चाहिये क्योंकि पौधे, प्राणी और सम्पूर्ण जीवन भी लोक में शामिल है। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि ऐसा नहीं है कि प्रकृति के सभी आयाम स्वास्थ्यवर्धक और सुरक्षित ही हों। कई प्राकृतिक स्थल मानव में अकेले डर पैदा कर सकते हैं।जो हवा, पानी और मिट्टी स्वास्थ्य के लिये सर्वथा उपयुक्त होती है, वही प्रदूषित होने या प्राकृतिक आपदाओं के स्वरूप में और पर स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो सकती है। प्राकृतिक वातावरण के जो प्राणी बहुत सुन्दर लगते हैं उनमें से बहुत हिंसक भी हो सकते हैं। इन बातों को ध्यान में रखते हुयेप्रकृति-अनुभवअपने अन्य रूपों में हमारे स्वास्थ्य की स्थिति को निर्धारितकरते हैं।इस दृष्टिकोण से प्रकृति और पर्यावरण को निहारना, प्राकृतिक वातावरण में घूमना-फिरनास्वास्थ्यकरहोता है।

प्रकृति-अनुभव किन कारणों से हमारे स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है? या अन्य शब्दों में कहें तो प्रकृति से जुड़ाव के स्वास्थ्यकर होने की मैकेनिज्मऑफ़ एक्शन क्या है?अनेक अध्ययनों के प्रमाण स्पष्ट करते हैं कि प्रकृति का मानव शरीर और मन पर स्वास्थ्यकर प्रभाव स्वास्थ्य के विविध आयामों को बेहतर करने मेंप्राकृतिक वातावरणोंकी भूमिका केकारण होता है। उदाहरण के लिये प्रकृति-अनुभव से स्वास्थ्य में सुधार की मैकेनिज्मऑफ़ एक्शन को मानसिक तनाव, चिंता औरअवसाद में कमी, मन की प्रसन्नता में बढ़ोत्तरी, अच्छीनिद्रा,मनोहारीअनुभूति, दर्द-नियंत्रण, बेहतर सामाजिक संपर्क, व्यायाम में बढ़ोत्तरी, हृदय रोगों में कमी, प्रतिरक्षा तंत्र में सुधार आदि के प्रकाश में देखा जा सकता है।वनानुभव-चिकित्सा (वनों में घूम-फिर कर प्रकृति का अनुभव करना) इम्यूनिटी भी बढ़ाती है (देखें, वाय. चे इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़एनवायनमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, १8(16), 2021)।

शर्नल में हरियाली से स्वास्थ्य लाभ के बारे में वर्ष 18०0 के बाद से कई छिटपुट अध्ययन मिलते हैं और शहरी विकास में इन्हें शामिल करने के प्रयास भी दुनिया भर में हुये हैं। इन सब अध्ययनों में एक सन्देश मिल रहा था कि हरियाली को अनुभूत करना या हरियाली का एक्सपोज़र स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है, परन्तु व्यवस्थित समीक्षा और मेटा-एनालिसिस अब आना शुरू हुये हैं। हाल ही में हरियाली से मिलाने वाले लाभग 1०0 प्रकार के स्वास्थ्य-लाभ के निष्कर्षों वाले 143 अध्ययनों को शामिल कर एक मेटा-एनालिसिस की गयी। इससे यह रोचक परिणाम मिले। अलग अलग अध्ययनों को देखने पर यह भी स्पष्ट हुआ कि स्वास्थ्य परिणामों में 66.7 प्रतिशत से १०० प्रतिशत तक बेहतरी हुई है। इनमें न्यूरोलॉजिकल, कैन्सर, व श्वसन रोगों से मृत्यु दर में कमी भी पाई गयी (देखें, सी. टोहिंग-बेनेट, ए. जोन्स,

समकालीन शोध में पिछले कई दशकों से विभिन्न विषयों के विद्वानों ने अपनी विधा के अनुसार इस बात की ओर ध्यान खींचा है कि प्रकृति से जुड़ने और मानव स्वास्थ्य में सुधार के बीच सकारात्मक संबंध है

एनवायनमेंटल रिसर्च, 166: 628-637, 2०18)। इस विषय में सबसे भारी अध्ययन जिसका विित-पोषण विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किया गया था, वह वर्ष 2०19 में दुनिया के एक अगुआ जर्नल में प्रकाशित हुई। हरियाली को स्वास्थ्य-निर्धारक, स्वास्थ्य में सुधार, और विभिन्न प्रसन्नता के लिये उपयोगी माना जाता रहा है। इस व्यवस्थित अध्ययन मेंविश्व भर के अनुदैर्घ्य अध्ययनों से प्राप्त प्रमाणों की इस बात के लिये समीक्षा की गयी कि हरियाली, पार्क्स, गार्डन्स आदि की उपलब्धता का सकल मृत्यु दर में प्रभाव क्या है। इस मेटा-एनालिसिसमें प्रारम्भ में 9298 अध्ययन और 13 अन्य अध्ययनों की पहचान की गयी। इनमें से 9234 (99 प्रतिशत) अध्ययनों को शीर्षक और सारांशजान्चने के बाद अपग करते हुयेशेष 77 अध्ययनों में से 68 (88 प्रतिशत) को सम्मिलित किया गया। उक्त के साथ ही मात्रात्मक मूल्यांकन हेतु नौ (12 प्रतिशत) अध्ययनों को शामिल किया।इनमें सात देशों के 8.32 लाखव्यक्ति शामिल थे। कुल मिलाकर निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि आसपास कीहरियाली और सकल-कारण मृत्यु दर के बीच एक व्युत्क्रम रिश्ते का प्रमाण पाया गया। कहने का तात्पर्य यह कि जैसे जैसे हरियाली की उपस्थिति बढ़ती जाती है वैसे वैसे सभी कारणों से मृत्यु दर में कमी आती जाती है। सन्देश यह है कि मानव समाज जहाँ रहता और काम करता है वहाँ हरियाली बढ़ाने और जैव-विविधता संरक्षण को बढ़ावा देना मानव स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी है (देखें, डी. रोजसरएडा आदि, द लैसेटप्लेनेटरी हेल्थ, 3,11:इ469-इ477,2०19)।

एक अन्य महत्वपूर्ण मेटा-एनालिसिस में बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न पर जांच की गयी कि गर्भावस्था में प्रतिकूल परिणामों पर आवासीय हरियाली का क्या प्रभाव रहता है। इसमें कुल 36 अध्ययन शामिल थे और कुल मिलाकर1.19 करोड़(11.9 मिलियन) प्रतिभाग्य थे। परिणाम स्पष्ट करते हैं कि हरियाली वाले स्थलों में जन्म के समय न्यूनतम वजन का जोखिम उच्च स्तर की हरियाली वाले समूह में काफी कम था। गर्भावधि उम्र कमरहने की संभावना भी उच्च हरियाली वाले क्षेत्रों में घटी पायी गयी। इसके अलावा अधिकहरियाली वाले क्षेत्रों में माता-जोखिम कम पाया गया और मानसिक विकारों में भी कमी पायी गयी। यह समीक्षा आवासीय हरियाली और गर्भावस्था के प्रतिकूल परिणामों के बीच एक उल्टे रिश्ता होने की पुष्टि करती है। अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट कर देते हैं कि हरियाली गर्भवती महिलाओं के लिएजोखिम घटाती है (वाइ. झान आदि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 718: आर्ट. 13742०, 202०)। हाल ही में वनानुभव को मानसिक स्वास्थ्य में बेहतरी लाने के ठोस प्रमाण मेटा-एनालिसिस से प्राप्त हुए हैं (देखें, वाई. कोटरा इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड एडिक्शन, 20(1):337-361, 2०22)। एक अन्य मेटा-एनालिसिस से सिद्ध होता है कि वनानुभव अवसाद व चिंता से बचाने हेतु श्रेष्ठ गैर-औषधीय युक्ति है (पी.एस. येओन इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़एनवायनमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 18(23): 2०21)।रैंडमाइज्डकंट्रोल्डडुप्लक्स की मेटा-एनालिसिस का निष्कर्ष भी स्पष्ट करते हैं कि वन-आधारित गैर-औषधीय चिकित्सकीय दखल मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं (देखें, एम.जे. कांग इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़एनवायनमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 19(8): 2०22)।) हाल ही में 52 अध्ययनों में समाहित 5.2 मिलियन लोगों के आंकड़ों को लेकर की गई मेटा-एनालिसिस सिद्ध करती है कि ठीन-स्पेस के आसपास रहने वाले लोगों में डायस्टोलिक और सिस्टोलिकब्लडप्रेशर में सुधार होता है (देखें, वाई. झाओ इत्यादि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 817: 152513,2०22)। हमारा समाज आजशहरीकरण,संसाधन-विद्रोहन औरजीवनशैली मेंबदलाव के कारण प्रकृति-उन्मुखता से प्रकृति-विमुखताकी ओर जा रहा है। संहिताओं, शोध और अनुभव की त्रिवेणी से उत्पन्न ज्ञान इस बात के पुष्टा करता है कि हरियाली गर्भवती महिलाओं के लिएजोखिम घटाती है अतिवार्य है। शोध स्पष्ट करती है कि प्रकृति-अनुभवसे स्वास्थ्य-लाभ के मूल में वायु गुणवत्ता, शारीरिक गतिविधि और व्यायाम, सामाजिक सामंजस्य और तनाव में कमी आदि कारक हैं। इस तमाम चर्चा का मूल संदेश यह है कि पर्यावरण के साथ हमारे संबंध हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। वनानुभव और प्रकृति-अनुभव अनेक रूपों में हो सकता है। हमारे आसपास हरियाली को बढ़ावा देना, वनों उपवनों में घूमना, प्राकृतिक स्थलों में सैर-सपाटा, प्रतिदिन समीपवर्ती बाग-बगीचों में जाकर काम से कम एक घंटे का समय बिताना, कार्य-स्थलों मेंहरियाली बढ़ाने के लिये छोटे-छोटे गार्डन या बगीची विकसित करना, बैठने के स्थान में खिड़की से दिखने वाला हरा-भरा दृश्य, कार्यालय में पांच मिनट का ब्रेक लेकरहरियाली में टहल कर आना आदिसब छोटे-छोटे ऐसे कार्य हैं,जिनके माध्यम से हमारा प्रकृति के साथ जुड़ाव बना रहता है। इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह याद रखने योग्य है कि चूँकि प्रतिदिन व्यायाम और योग करना स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है अतः व्यायाम और योग वनों,हरे-भरे स्थलों, बाग-बगीचों, नदी या झील के समीप किया जाये तो शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिये अधिक उपयोगी हैं। बच्चों को भीवनानुभव और प्रकृति-अनुभव कराइये।हरियाली से जुड़ाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है।जीवन के प्रारम्भिक काल में प्रकृति से जुड़ाव मानव और प्रकृति के मध्य आजीवन सार्थक रिश्ता बनाने हेतु आवश्यक है।प्रकृति के साथ जुड़े रहिये। योग और व्यायाम कीजिये। आनंदित रहिये। स्वस्थ रहिये।

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और ‘सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत’ से प्रेरित हैं)

राजस्थान के लौह पुरुष: दामोदर लाल व्यास



डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा

राजस्थान के लौह पुरुष दामोदर लाल व्यास राजस्थान में रियासतों की एकीकरण की विचारधारा, चेतना के प्रेरणा स्रोत थे। उनके जीवन से राजनीति में सच्चाई और नैतिकता के सर्वोपरि को सीखा जा सकता है। व्यास जैसे युगपुरुष की स्मृति याद दिलाती है कि सत्ता नहीं, सेवा ही सच्चा धर्म है।

राजस्थान के प्रथम गृह मंत्री दामोदर लाल व्यास की राजनीतिक शक्ति और दृढ़ संकल्प ने राजस्थान की रियासतों का एकीकरण कर राजस्थान को राज्य के रूप में विकसित किया। इस अभूतपूर्व और ऐतिहासिक कार्य की

परिणिति के लिए ही उन्हें राज्य के लौह पुरुष के रूप में जाना जाता है। उन्होंने विधान सभा के सदस्य के रूप में शुरूआत में टोंक और मालपुरा दोनों सीटों से जीत हासिल की थी। बीए और एलएलबी की पढ़ाई करने के बाद व्यास ने वकालत आरम्भ की। उनके नाम का उल्लेख अनेक कानूनी लेखों में है। वे मालपुरा, टोंक में नगरपालिका बोर्ड, राजस्थान टेबल टेनिस एसोसिएशन और राजस्थान बास्केटबॉल एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रहे थे। विभिन्न सामाजिक और शैक्षिक संगठनों में उनका योगदान अविस्मरणीय है।

टोंक जिले का मालपुरा मालदेव पंवार की नगरी के रूप में प्रसिद्ध है। यहां कभी महाराणा प्रताप की सेना ने पड़ाव डाला था। इस ऐतिहासिक जगह पर रहने वाले बृजलाल लाल व्यास और कस्तूरबा व्यास के घर में 9 नवम्बर 19०9 को दामोदर लाल व्यास पैदा हुए। राजस्थान की राजनीति में अपना ख़ास मुकाम बनाकर टोंक जिले के नाम को हमेशा के लिए रोशन करने वाले राजस्थान के इतिहास में लौह पुरुष के नाम से ख्यात दामोदर लाल व्यास का नाम आज भी बड़े अदब से लिया जाता है।

बेसहारों का सहारा “अनुबंध वृद्धजन कुटीर”



मिश्रीलाल पंवार

बदलते दौर का मंजर चिन्ता दायक है। घर के वृद्ध माता-पिता संतान को बोझ लगने लगे हैं। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव कहे या हमारे संस्कारों में ही कहीं कमी का रह जाना रहा हो, हवा तेजी से बदल रही है। शहर-शहर वृद्धाश्रमों का मकड़जाल फैलता जा रहा है। क्या गरीब क्या अमीरा सभी वर्ग में जैसे होड़ मची हुई है।बुजुर्गों को वृद्धाश्रम भेजने का फैशन चल पड़ा है। दूसरी तरफ स्माज में ऐसे लोग भी हैं, जो बेसहारा का सहारा बन कर उनके जीवन में खुशियां भर देते हैं।यह दूसरी बात है कि अपने ही बच्चों की उपेक्षा के शिकार लोग वृद्धाश्रम में हम उप्र लोगों का साथ पाकर खिल उठते हैं।

आज हम जोधपुर स्थित एक एक वृद्धाश्रम की बात करते हैं। जोधपुर शहर से कोई 1० कि.मी. दूर मंडोर क्षेत्र में स्थित ‘अनुबंध वृद्धजन कुटीर’ आज बेसहारा का सहारा बना हुआ है। नीमा नीमड़ी नामक प्राचीन तीर्थ जाने वाली सड़क एक एक विशाल खुले रमणीक से स्थल पर एक नया बड़ा-

सा भवन दिखाई देता है। इसका नाम है ‘अनुबंध वृद्धजन कुटीर’। वृद्धजनों के सम्बल के सरोकार से जुड़ा होने से जीवन की खुशियां हर समय बाहें पसारे रहती है। यहां पर रहने वाले वृद्ध जनों को घर जैसा माहौल मिलता है। जीवन से दूर हो चुकी किसी चेहरे की हंसी पुनः लौट आई है।

बदलते दौर में वृद्धजनों के लिये आश्रमों की संख्या पिछले वर्षों में बढ़ी है। परन्तु अनुबंध वृद्धजन कुटीर की अपनी अलग ही पहचान है। जोधपुर में सन् 2०02 में स्थापित अनुबंध वृद्धजन कुटीर आश्रम सेवा के क्षेत्र में एक प्रेरणादायक अपना अलग सा ही प्रतिमान प्रस्तुत करता है। सामान्य वृद्धाश्रमों से भिन्न होने से इसकी सेवा के आगे हर कोई नतमस्तक हो जाता है। हस्तशिल्प व्यवसायी नरेन्द्र अडवानी व पत्नी अनुराधा अडवानी इसके संचालक हैं।

इसका व्यय व्यक्तितग संसाधनों से ही सम्पादित है। इस आश्रम में करीब 7०-75 वृद्ध रहते हैं। घर से निक़ासित, बेसहारा, शारीरिक रूप से अशक्त , साधनहीन या साधन हीन कर दिये गये वृद्ध और परिवार के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाये के कारण 60 से 95 वर्ष की आयु के बीच के स्त्री पुरुष यहां पर जैसे माहौल में रहते हैं। यहां 12 बड़े कमरे व 6 कपल्स रूम बने हुए हैं। उनके आहार, सेवा, चिकित्सा की माकुल व्यवस्था है। आवश्यक उपकरणों से लैस चिकित्सा कक्ष भी है। जिसमें जरूरी दवाइयों के अलावा आक्सीजन सेंलेटर, ईसीजी मशीन इत्यादि उपलब्ध है। दिन के 2 बार् डाक्टर विज़िट सेवा उपलब्ध रहती है। स्वयं की एम्बुलेंस की सुविधा उपलब्ध है।

प्रतिभा सम्पन्न व्यास का राजनीतिक जीवन स्वतन्त्र भारत में हुए पहले चुनाव (1951) से ही आरम्भ हो गया था। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, देवस्थान विभाग का कार्य संभालने के साथ पंचायती राज में भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किये। एक सख्त और अनुशासनप्रिय जन नेता व्यास ने गृह मंत्रालय बखूबी संभाला। मालपुरा की तरक्की में दामोदर लाल व्यास के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता।

एक अदम्य संकल्प का नाम दामोदर लाल व्यास राजस्थान की धरती पर जन्में ऐसे सपुत हैं जिन्होंने अपनेकर्म, साहस और निष्ठा से इतिहास रचा। जिन्हें पूरे राजस्थान में लौह पुरुष के नाम से जाना जाता है। दृढ़ता, ईमानदारी और अडिग राष्ट्रभक्ति के साथ भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के निधुन पर राजस्थान में रियासतों के एकीकरण के लिए कार्य किया। उनका जीवन राजनीतिक शुचिता और जनसेवा की मिसाल है। उनमें समाज के प्रति गहरी संवेदना थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजस्थान में लोकतंत्र की नींव रखे जाने के साथ

ही व्यास ने राजनीति में प्रवेश किया। राजस्थान विधानसभा के प्रथम चुनाव 1952 से लेकर 1972 तक लगातार चार बार विधायक निर्वाचित हुए। राजस्व, गृह, देवस्थान, चिकित्सा, अकाल राहत और पंचायती राज में मंत्री के रूप में कार्य किया। उनकी सबसे बड़ी विशेषता स्पष्टवादिता और निर्णय क्षमता थी। वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों से डगमगाते नहीं थे।

दामोदर लाल व्यास ने राजनीति को सेवा का माध्यम माना। वे मानते थे कि शासन में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व ही लोकतंत्र की आत्मा है। वे आमजन से सीधे संवाद रखते थे। पंचायती राज विभाग के मंत्री रहते हुए उन्होंने ग्रामीण स्वावलंबन को प्रोत्साहित किया।राजस्वविभाग में रहते हुए उन्होंने किसानों के लिए भूमि विवाद निपटान की प्रक्रिया को सरल और जनहितकारी बनाया। वे महिलाओं की शिक्षा को सामाजिक उत्थान का आधार मानते थे। उनके व्यक्तित्व में सादगी, आत्मविश्वास और कर्मठता का अद्भुत संगम था। वे न केवल कठोर निर्णय लेने वाले प्रशासक बल्कि रचनात्मक और सहृदय जननेता भी थे। उनकी वाणी



स्व. दामोदर लाल व्यास

में ओज था, और व्यवहार में विमनता। राजनीति के साथ-साथ वे सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहे। उन्होंने गरीबों, किसानों और शिक्षार्थियों के लिए कई जनसेवी योजनाएँ प्रारंभ कीं। उनका मानना था कि सत्ता का मूल्य तब ही है जब वह जनकल्याण में रूपांतरित हो। दामोदर लाल व्यास का देहावसान 14 जनवरी, 1976 को हुआ। राजस्थान के राजनीतिक इतिहास में उनका नाम ईमानदारी, दृढ़ता और लोकसेवा का पर्याय है।

–डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा, साहित्यकार

अनुबंध वृद्धजन कुटीर”

इसके अतिरिक्त दो निजी अस्पताओं से सम्पर्क है। जहाँ आपातकाल में तुरंत जाया जा सकता है। दो मंजिल इमारत में लिफ्ट की व्यवस्था भी उपलब्ध है। संपूर्ण भारत के विभिन्न क्षेत्रों से वृद्धजन अपना शेष जीवन यापन करने पहुंचते हैं।

व्यवस्था हेतु आवश्यक 18 कार्यकर्ताओं का स्टाफ 24 घंटे तैनात रहता है। प्रबन्धन अडवानी दम्पति करते हैं। आश्रम की सफाई व रख-रखाव देखकर कोई भी आश्चर्य चकित हुए बगैरे नहीं रह सकता। आश्रमवासियों को यहाँ प्रशिक्ष करने में जाति, धर्म, समुदाय, लिंग आदि का कोई भेद नहीं रखा जाता है। आश्रमवासियों के अधिकतर स्त्री-पुरुष बुढ़ापे की अक्षमताओं से प्रसित हैं।विकलांग,अंगभंग,अन्धापन युक्त वृद्ध भी इनमें शामिल हैं। किसी भी प्रकार का नशा करने वालों को भर्ती नहीं किया जाता है। सभी कमरों में टीवी की सुविधा उपलब्ध है। सभी प्रकार के इन्डोर गेम तथा लाइब्रेरी भी है। आहार में पौष्टिकता पर बल है। नियमितता पर भी बल है। आहार में परिवर्तन चिकित्सकीय सलाह पर किया जाता है। पिछले कई वर्षों से रह रहे आश्रमवासी धूल-मिल जाने के कारण व प्रबन्धकों व सेवाार्थियों के व्यक्तितग भावनात्मक व्यवहार से वे एकाकीपन महसूस नहीं करते।

अधिकांश आश्रमवासी संघात परिवारों के हैं परन्तु अब उनके पास कोई पैसा आदि नहीं है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि प्रबन्धकर्ताओ का यही प्रयास रहता है कि आश्रमवासी अपने भूतकाल को नहीं कुरेदें। एक महत्त्वपूर्ण बात प्रबन्धकों की यह है कि यहां आम आदमी बिना स्वीकृति के

परिवारों के हैं परन्तु अब उनके पास कोई पैसा आदि नहीं है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि प्रबन्धकर्ताओ का यही प्रयास रहता है कि आश्रमवासी अपने भूतकाल को नहीं कुरेदें। एक महत्त्वपूर्ण बात प्रबन्धकों की यह है कि यहां आम आदमी बिना स्वीकृति के

ख्वाजा साहब के 814वें उर्स की तैयारियों को लेकर चर्चा जिला प्रशासन और दरगाह प्रतिनिधियों के साथ हुई समीक्षा बैठक

- जिला कलेक्टर लोकबंधु की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में उर्स मेले की सभी व्यवस्थाओं की समीक्षा व जायरिनों की सुविधाओं को लेकर निर्देश दिए**

- ‘उर्स की अनौपचारिक शुरुआत 16 दिसंबर से होगी, जबकि चांद दिखाई देने के बाद धार्मिक रस्मों की शुरुआत की जाएगी और अगले दिन जमती दरवाजा खोल दिया जाएगा’**

आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। इस अवसर पर जिला कलेक्टर लोकबंधु ने कहा कि ख्वाजा साहब का 814वां उर्स आगामी 16 दिसंबर

से प्रारंभ होगा, जिसकी तैयारियों को लेकर सभी विभागों को समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए गए हैं ताकि उर्स मेला शांतिपूर्ण और

सुचारू रूप से संपन्न हो सके। बैठक में दरगाह परिसर और आसपास के क्षेत्रों में सुरक्षा, सफाई, यातायात, जलपूर्ति और रोज़ाना की व्यवस्थाओं को लेकर भी चर्चा हुई। दरगाह क्षेत्र में सीसीटीवी कैमरों की संख्या बढ़ाने के सुझाव दिए गए ताकि जायरीनों की भीड़ पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके।

दरगाह दीवान के पुत्र नसरुद्दीन चिश्ती ने बताया कि उर्स की अनौपचारिक शुरुआत 16 दिसंबर से होगी, जबकि चांद दिखाई देने के बाद धार्मिक रस्मों की शुरुआत की

जाएगी और अगले दिन जमती दरवाजा खोल दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि दिसंबर माह की सदी को देखते हुए जायरीनों के ठहरने और सुविधा की बेहतर व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

जिला कलेक्टर लोकबंधु ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दरगाह क्षेत्र की सफाई व्यवस्था, ट्रैफिक प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं पहले से सुनिश्चित की जाएं, ताकि देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जिला कलेक्टर लोकबंधु ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दरगाह क्षेत्र की सफाई व्यवस्था, ट्रैफिक प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं पहले से सुनिश्चित की जाएं, ताकि देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जिला कलेक्टर लोकबंधु ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दरगाह क्षेत्र की सफाई व्यवस्था, ट्रैफिक प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं पहले से सुनिश्चित की जाएं, ताकि देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जिला कलेक्टर लोकबंधु ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दरगाह क्षेत्र की सफाई व्यवस्था, ट्रैफिक प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं पहले से सुनिश्चित की जाएं, ताकि देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जिला कलेक्टर लोकबंधु ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दरगाह क्षेत्र की सफाई व्यवस्था, ट्रैफिक प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं पहले से सुनिश्चित की जाएं, ताकि देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जिला कलेक्टर लोकबंधु ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दरगाह क्षेत्र की सफाई व्यवस्था, ट्रैफिक प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं पहले से सुनिश्चित की जाएं, ताकि देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जिला कलेक्टर लोकबंधु ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दरगाह क्षेत्र की सफाई व्यवस्था, ट्रैफिक प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं पहले से सुनिश्चित की जाएं, ताकि देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जिला कलेक्टर लोकबंधु ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दरगाह क्षेत्र की सफाई व्यवस्था, ट्रैफिक प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं पहले से सुनिश्चित की जाएं, ताकि देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जिला कलेक्टर लोकबंधु ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दरगाह क्षेत्र की सफाई व्यवस्था, ट्रैफिक प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं पहले से सुनिश्चित की जाएं, ताकि देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

जिला कलेक्टर लोकबंधु ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दरगाह क्षेत्र की सफाई व्यवस्था, ट्रैफिक प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं पहले से सुनिश्चित की जाएं, ताकि देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।